SJIF Impact Factor - 5.54

E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume I (A)

हिंदी साहित्य : विमर्श के विविध आयाम

* अतिथि संपादक *

डॉ. अनंत केदारे
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग

डॉ. भाऊसाहेब नवले
उपप्राचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग

लोकनेते डॉ.बाबासाहेब विखे पाटील (पद्मभूषण उपाधि से सन्मानित)
प्रवरा ग्रामीण शिक्षण संस्था का कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, सात्रल, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli, AMRJ
For Details Visit To : www.aimrj.com

Akshara Publication

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume I (A) SJIF Impact- 5.54

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April 2022

Special Issue 05 Volume I (A)

हिंदी साहित्य : विमर्श के विविध आयाम

अतिथि संपादक

डॉ. अनंत केदारे
सहयोगी प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,

डॉ. भाऊसाहेब नवले
उपप्राचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

लोकनेते डॉ. बालासाहेब विखे पाटिल (पद्मभूषण उपाधि से सम्मानित) प्रवरा ग्रामीण शिक्षण संस्था का
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, सात्रल, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

Akshara Publication
Plot No 143 Professors colony,
Near Shivani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

AMRJ

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April 2022 Special Issue 05 Volume I (A) SJIF Impact- 5.54

Index

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
1	समकालीन अस्मितामूलक विमर्श (आदिवासी विमर्श के विशेष संदर्भ में)	प्रा. डॉ. भरत शेणकर	05
2	21 वीं सदी की हिंदी कविता : आदिवासी संवेदना	डॉ. भाऊसाहेब नवनाथ नवले	09
3	समकालीन हिन्दी कविता में आदिवासी विमर्श	डॉ. सुरेन्द्र शर्मा	12
4	हिंदी साहित्य में आदिवासी नारी विमर्श	प्रा. वडगे वृषाली रंगनाथ	15
5	दक्षिणी राजस्थान में आदिवासी जन आन्दोलन और महिलाएं: एक विमर्श	मदन लाल सुथार	18
6	उत्तराखंड का दलित विरोधी लुप्त लोकोत्सव : बेडवार्त	डॉ.संजीब सिंह नेगी	22
7	आदिवासी अस्मिता एवं अस्तित्व: एक विमर्श	श्री.राजेंद्र वसंतराव जाधव डॉ. भाऊसाहेब नवले	27
8	हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श	सौ.मनिषा कल्याण तावरे	31
9	हिंदी कथा- साहित्य में दलित विमर्श	वैशाली काशिनाथ गायकवाड	33
10	'जब मैं स्त्री हूँ' में स्त्री विमर्श के नए स्वर'	डॉ. अनंत केदारे	36
11	'कोठा नं. 64' में वेश्या जीवन और संघर्ष	डॉ.पंडित बन्ने	42
12	दलित कविता में आस्मिता मूलक विमर्श	डॉ. मंगल कोंडिबा ससाणे	44
13	हिंदी नाटक और स्त्री विमर्श	डॉ. सौदागर सालुंके	48
14	जैनेंद्रकुमार की कहानियों में नारी विमर्श एवं समस्याएँ	प्रा. डॉ. राजेंद्र काशिनाथ बाविस्कर	50
15	'दुक्खम सुक्खम' उपन्यास में स्त्री समस्याओं का यथार्थ	पूनम वर्मा	54
16	गौरी देशपांडे के कहानियों में चित्रित पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित एवं अकेलेपन से पीड़ित स्त्री	प्रा. नामदेव ज्ञानदेव शितोळे	57
17	`बसंती` उपन्यास में स्त्री विमर्श	अनीता कुमारी	60
18	यशपाल के 'मनुष्य के रूप' उपन्यास में नारी विमर्श	डॉ. नारायण बागुल	66
19	मालती जोशी का कथा साहित्य : स्त्री विशेष के संदर्भ में	प्रा.सौ. रेशमा गणेश लोंढे	68
20	हिंदी साहित्य में मानवतावाद के परिप्रेक्ष्य में स्त्री संवेदनाएं	डॉ. चंदा सोनकर	70
21	नासिरा शर्मा के 'अजनबी जजीरा' उपन्यास में व्यक्त नारी विमर्श	योजना रामकिशन नाकाडे डॉ. रमेश शिंदे	73
22	जयप्रकाश कर्दम के उपन्यासों में नारी विमर्श ('करुणा' उपन्यास के विशेष संदर्भ में)	डॉ. संदिप दामू तपासे	75
23	महानगरीय कथा साहित्य में नारी विमर्श	डॉ. पवार सीताबाई नामदेव	79
24	'गिरिराज किशोर के उपन्यास साहित्य में नारी विमर्श'	प्रा. नयना मोहन कढाळे	82
25	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श के विविध आयाम	डॉ. रीतू भटनागर	84
26	उच्चशिक्षित महिलाओं की बदलती स्थितियाँ	डॉ. रिना रमेश सुरडकर	87
27	[illegible]	[illegible]	[illegible]
28	मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा में स्त्री विमर्श के विविध आयाम	प्रा. मीना ठाकूर	91
29	कंजर नारी की त्रासदी का वास्तविक लेखा जोखा	गिरीश रामनाथ सालपुते डॉ. जितेंद्र पितांबर पाटील	93

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April 2022 Special Issue 05 Volume I (A) SJIF Impact- 5.54

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
30	स्त्री स्वतंत्रता की तलाश 'हॉकी खेलती लड़कियाँ '	डॉ. सारिका भगत	96
31	उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में नारी जीवन	डॉ. नवनाथ गाड़ेकर	99
32	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श	सतीश मधुकर साळवे	102
33	अनामिका की कविताओं में स्त्री संवेदना	डॉ. संतोष विजय येरावार	106
34	डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव की कहानियों मे स्त्री - विमर्श और दलित चेतना	प्रा. ललिता भाऊसाहेब घोडके	109
35	कनउजी लोकगीतों में नारी-विमर्श	शिखा पाण्डेय	112
36	रामदरश मिश्र के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श	प्रा. डॉ. बेबी राघू कोलते	115
37	श्रीप्रकाश मिश्र के उपन्यासों में जनजातीय विमर्श	सुशील कुमार	118
38	'ग्लोबल गाँव के देवता 'का आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ.सानिया गुप्ता	124
39	गीतकार जावेद अख्तर की प्रासंगिक प्रयोगशीलता	प्रा. डॉ . शिवाजी उत्तम चवरे	128
40	हिंदी साहित्य में दलित विमर्श	डॉ. मनिषा गंगाराम मुगळीकर	131
41	हिंदी साहित्य में दलित विमर्श	कु. साळवे मंगल भाऊसाहेब	134
42	ਕਸ਼ਮੀਰੀ ਸੰਗੀਤ ਦੇ ਰਿਵਾਇਤੀ ਸਾਧਨ	ਡਾ.ਰਾਜਬੀਰ ਸਿੰਘ ਸੋਢੀ*	137

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume I (A) SJIF Impact- 5.54

33

अनामिका की कविताओं में स्त्री संवेदना

डॉ. संतोष विजय येरावार
सहायक प्राध्यापक
देगलूर महाविद्यालय, देगलूर
ysantosh2723@gmail.com Mobile No. 8087004972

अनामिका जी ने स्त्री जीवन की वास्तविकताओं को उनके संघर्ष को. वेदना को एवं मानसिकता का सरावा " वाणी प्रदान की हैं | परंपरा को तोडनेवाली आत्मबल से लबरेज एवं एक सशक्त नारी उनकी कविता से मुखारत हा गई है | शोषण, अन्याय अत्याचार, अवमानना उपेक्षा, एवं पुरुषी अहंकार से आहत स्त्री भी चित्रित है | डॉ. रवि रंजन अनामिका के कविता के विषय में कहते है | कहना न होगा कि परंपरा व्दारा प्रेषित व स्थापित व्यवस्था को व्यस्त करने के लिए बंधी हुई मुट्ठी के प्रति अत्यान्तिक आकर्षण कई बार आवेश व आवेग की मुद्रा के प्रति भाऊक लगाव का आकर्षण होता है और यह अतिरिक्त भाऊक लगाव वैचारिकता के बजाय प्राय : ऐसे वैचारिक हम एवं बागाडंबर को जन्म देता है, जिससे आदमियत की पहचाना धुमिल होती है | अनामिका की कविताओं में परंपरा को लेकर एक संवेदनशील अलोचनात्मक रवेया दिखाई देता हैं | उनमें वह सच्ची व वयस्कर वैचारिकता है जो परंपरा की खोजबीन कर उसी में से रचनात्क प्रतिराधे के सौदर्याबोधात्मक बिंदु ढूँढती हुई पाठक के साथ किसी तात्कालीक प्रभाव के बजाय बोध का रिश्ता कायम करती हैं | इसलिए उनकी कविताकी प्रकृति उन स्त्रीवादी कविताओं से नितांत भिन्न व विशिष्ट है जिनमें आतंक की हद तक यथार्थ का इस्तेमाल करते हुए पाठक को अभिभूत करने की चेष्टा की जाती हैं | टेढ राजनीतिक शब्दावली व बड़बोलापन से खुद को जाने अनजाने बचाती हुई उनकी कविताएं कई बार अपनी जनवदीय संस्कृति से उर्जा प्राप्त कर पितृसत्ता के विरुध्द संवेदनात्क प्रतिरोध दर्ज करने के लिए अपमेय व उपमान तलाशती हैं। सामाजिक समस्याओं को निकट से देखने - दिखाने की जो रचनात्मक आतुरँता उनमें हे वह विचारों की टकराहट से पेदा हुई है | एक अर्थ में उनकी कविता की रचना प्रक्रिया गहरे संशय से अडिग विश्वासू की तरफ काव्य-यात्रा की प्रक्रिया है|" अनामिका जी ने स्त्री लेखन को नए आयाम दिए हैं | अपनी अस्तित्व को संजोए हुए भावानाओं, एवं स्त्री जीवन की वास्तविकताओं को निभर्य होकर व्यक्त किया है |

भारतीय समाज और पुरुषी अहंकारी मानसिकता ने स्त्री को उपभोग तक सिमित रखा है | स्त्री पुरुषो के लिए स्वार्थ सिद्धी का साधन मात्र हैं | स्त्री की अवहेलना, उपेक्षा, अपमान, एवं तिरस्कार करना पुरुष अपना अधिकार समझने लगता है | पुरुषो की इस संकुचित एवं विकृत मानसिकता को अनामिका ने उघाडा हैं - "पढा गया हमको जैसे पढा जाता हैं, कागज /बचों की फटी कॉपियो का /चनाजोर गरम के लिफाफे बनाने के पहले | /देखा गया हमको /जैसे की कुप्त हो उनींदे /देखी जाती हैं कलाई घडी /अलस्ससुबह अलार्म बजने के बाद | /सुना गया हमको /जैसे सुने जाते हैं फिल्मी गाणे /भोगा गया हमको /बहुत दूर के रिश्तेदारों के /दुख की तरह /एक दिन हमने कहाँ / हम भी इंसान हैं / चीखती हुई चीं-ची / दुश्चरित महिलाएं, दुश्चरित्र महिलाएं / हे परमपिताओं, परमपुरुषो / बख्शो, बख्शो, अब हमें बख्शों |"[१]

स्त्री का उपभोग करके फेकनेवाली परुषी विक्षिप्त मानसिकता पर करारा प्रहार अन्नामिका ने किया हैं | स्त्री अगर अपने अधिकारो के लिए मानवीय पशुसम व्यवहार में एवं प्रस्थापित व्यवस्था के विरोध में आवाज उठाती है, तो परुष उसे चरित्रहिन एवं कलंकित कहकर प्रताडित करता हैं | परुषों को स्त्री को अपने अधिन रखने में हि पुरुषत्व का अहसास होता हैं | स्त्री स्वतंत्रता की कल्पना मात्र पुरुषों को आहत करती हैं | 'हरदयाल' उपरोक्त काव्यपंक्तियों के बार में कहते है | "स्त्री जीवन के उन अनुभवों भावो और विचारों को व्यक्त किया गया हैं , जो पुरुष सतात्मक समाज में पुरुषाधीन स्त्री अनुभव करती है | जैसे स्त्री उपेक्षित है और उसमें अपनी स्थिती को लेकर विद्रोह भाव हैं लडकियों को अपनी कोई जगह नहीं होती है | जिसकी किमत उसे चुकानी पडती है | बच्चे और प्रेमी के बीच उसका व्यतित्व विभक्त होन के कारण व आत्महत्या भी नहीं कर सकती |"[२] स्त्री का अस्तित्व समाज निर्धारित करता है, स्वयं स्त्री नहीं ईस वास्तविकता को अनामिका जी ने उघाडा हैं - "बुझ चुकी है आखिरी चूल्हे की राख भी, और वह / अपने ही वजूद की आँच के आगे औचक हडबडी में / खुदको को ही सानती, / खुद को ही गूंधती हुई बार- बार /खुश है कि रोटी बेलती है जैसे पृथ्वी |"[३]

सदियों से स्त्री ने अपना संपूर्ण जीवन परिवार को समर्पित कर दिया है स्त्री की पहचान पुरुषों तक सिमित रखी गई है | स्त्री कोलु के बैल की तहर निरंतर परिवार सेवा में लगी रहती हैं | उसे अपने सुख-दुख के बजाय परिवार के सुख-दुख की चिंता होती हैं | इतने समप्रण के उपरांत भी उसके हिस्से में मात्र पीडा ही आती हैं | स्त्री की इस त्रासदी को अनामिका ने अभिव्यक्त किया हैं | स्त्री को

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume I (A) SJIF Impact- 5.54

जन्म से लेकर मृत्यू तक निरंतर कठिनाईयों का सामना करना पडता हैं | स्त्री को टिशु पेपर समझने वाली विकृत मानसिकता को उघाडती अनामिका की यह कविता है- "अपनी जगह से गिरकर / कहीं के नहीं रहते / केश, औरतें और नाखून / आरंभिक पाठों का / राम, पाठशाला जा / राधा खाना पका। / राम, आ बताशा खा। / राधा, झाडू लगा। / भैया अब सोएगा / जाकर, बिस्तर बिछा। / अहा, नया घर हैं। / राम देख, यह तेरा कमरा हैं। / और मेरा ? / ओ पगली / लडकियाँ हवा, धूप, मिट्टी होती है | / उनका कोई हार नहीं होता |"[४]

भारतीय समाज व्यवस्था ने स्त्री के साथ सदेव भेदभाव पुर्ण व्यवहार किया हैं | वारिस पाने की लालसा ने पुरुषों को हिंस पशु बना दिया हैं | स्त्री का जन्म पुरुषों की गुलामी के लिए हुआ है यह विकृत धारना को पुरुषों ने धारन किया है। परुषो की वासना भरी लालसा ने स्त्रीयों को पतित एवं उपेक्षित बना दिया हैं | स्त्री अस्तित्व को भोग तक सिमित रखने का प्रयास अहंकारी पुरुषी मानसिकता व्दारा किया जा रहा हैं | काम वासना की कामना पुरुषों को चरित्रहीन, पतित, विक्षिप्त एवं विकृत बना रही है | बलात्कार, यौन शोषण, जबरन वैश्या व्यवसाय में ढकेलना, कुमारा माताओं का बढता प्रमाण आदि वासना का परिणाम हैं | एक वैश्या की विवशता को उघाडती अनामिका की यह कविता.

"एक गुफ है
मेरी नाभि के नीचे
अपनी ही खुखरित से थके
शेर - चीते - अजगर
आते हैं, कुछ देर सोने यहाँ पर
एक नये आखेट की खातिर
जाते हैं जब अगले दिन बाहर उनके वे टुटे नाखून,
राल, कैचूल
एक अजब बहनावे से देखते है मुझे |"[५]

अपना संपूर्ण जीवन परिवार को समर्पित करने वाले स्त्री के हिस्से मात्र उत्पीडन ही आता हैं | सदैव प्रेम बांटकर समर्पण करनेवाली नारी दुःख के बोज से दबी हुई है। पति को परमेश्वर माननेवाली स्त्री को मारना, प्रताडित करना, अपमानित करना पुरुष अपना अधिकार समझता है | पुरुषों ने परंपरा और रिति-रिवाज के नामपर स्त्री शोषण को बढावा दिया है।

"खाये ही जाती हैं
शाम को सुबह तक
खुब मिर्चीदार गालियों
उपर से धणड, पसे, डॉट, ताने बोनस में।
बाई वन, गेट वन फ्री
और ज्यादातर तो सेम्पल मुफत बँटी बस यों ही।"[६]

भारतीय गृहिणी की दशा-दुर्दशा को अनामिका व्यक्त करती हैं | "आज तो ज्यादातर घरों में स्त्रियाँ नवस्वातंत्र्य के उल्हास में तिहरे दाईत्व निभा रही है | ये नोकरी करती हैं, गृहस्थी चलाती हैं और बच्चों को पढ़ा-लिखाकर बड़ी भी वे ही करती हैं। ऐसा नहीं है कि पुरुष निखट्टू हैं और वे नोकरी के सिवा कुछ कर नहीं सकत, पर उन्हें चौका-चुल्हा चलाना और रोता हुआ बच्चा डुलाना हेय और उबाउ दिखता है, और शरीर - बल के अधिक्य का दावा करने के बावजूद वे स्त्रियों की तरह खट नहीं पाते | जिन घरों मे स्त्रियाँ नोकरी करती है - बिजली - पाणी -टेलिफोन का बिल जमा करवाना, बँक-पोस्ट, ऑफीस.एल आई-सी के सारे काम, बचों के स्कुल आना-जाना, उनकी फीस भरना, आए-गए को देगुना - भालना, सौदा सुलुक करना ज्यादातर उन्ही के जिम्मे रहता हैं | और इसके समर्थन में एक सीधा तर्क यह दिया जाता है कि अधिकारों के साथ कर्तव्य क्यों नही बढे भला |" कामकाजी महिलाओं को दोहरी पीडा और शोषण का भागीदार होना पड़ता हैं- "सारा शहर चुप हैं, / धुल चुके हैं सारे चौकों के वर्तन | / बुझ चुकी है आखिरी चुल्हे की राख की भी, और वह / अपने ही वजूद की ऑच के आगे औचक हडबडी में | / खुद को ही सानती / खुद को ही गूंधती हुई बार-बार / खुश है कि रोटी बेली है जैसे पृथ्वी |"[७]

कामकाजी महिलाओं की पीडा को अनामिका ने अभिव्यक्त किया हैं | कामकाजी महिलाओं की स्थिति दो पाटों के बीच पीसनेवाले वस्तु की तरह होती है | वस्तु भी उपभोग के लिए होती एक स्त्री के समान | स्त्री संवेदना और इच्छओं को कुचलता पुरुष